हिमाचल प्रदेश सरकार

मन्त्री,
हिमाचल प्रदेश,
शिमला - 171002.

आदरणीय बन्धु,

हिमाचल प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में उन ऊचॉईयों को छू लिया है जो कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय एक सपना ही था। आज शिक्षा के क्षेत्र में हमारा प्रदेश शिखर पर है और मैं इसके लिए हृदय की गहराईयों से शिक्षा से जुड़े हुए प्रत्येक हिमाचलवासी का आभारी हूँ।

आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिखर में पहुंच कर शिखर पर बने रहना अत्यन्त चुनौती भरा है और इन चुनौतियों का सामना करने हेतु प्रत्येक हिमाचलवासी का सक्रिय सहयोग आवश्यक है। यह युग निजी क्षेत्र के वर्चस्व का प्रारम्भ है। शिक्षा में राज्य को शिखर पर ले जाने वाले सरकारी स्कूल इस युग की प्रवृति से अछूते नहीं रहे हैं तथा सरकारी स्कूलों से बच्चों का पलायन हो रहा है। मैं निजी क्षेत्र की कर्मठता का आकलन नहीं कर रहा हूं अपितु सरकारी स्कूलों में अभिभावकों की घटती प्रवृति या फिर अधोसरंचना सम्बन्धी कारण व सरकारी स्कूलों के प्रति पनपी उदासीनता की बात कर रहा हूं।

गहन अध्ययन के बाद मैंने यह पाया है कि सरकारी स्कूलों की अधोसरंचना तथा उसी प्रकार के निजी क्षेत्र के स्कूलों में अधोसरंचना में कुछ अपवादों को छोड़कर बहुत अन्तर नहीं है। सरकारी स्कूलों की सबसे बड़ी शक्ति हमारे अध्यापकों की निजी क्षेत्र में कार्यरत अध्यापकों की अपेक्षा शिक्षा–स्तर, प्रशिक्षण की दक्षता तथा बच्चों को पढ़ाने की क्षमता है। लगभग 99 प्रतिशत अध्यापकों में शिक्षा का स्तर निजी क्षेत्र की तुलना में कई गुना अधिक है। मुझे लगता है कि सरकारी स्कूलों के प्रति विमुखता बहुत कुछ अभिभावकों को शिक्षा व शिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी सुनिश्चित न किये जाने के कारण है। सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाएं शिक्षण कार्यक्रम को अंग्रेजी माध्यम से करवाने व मिड–डे–मील योजना भी अब तक पूरी तरह से सफल नहीं हुई है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष होता है कि राज्य के सरकारी स्कूल हिमाचल प्रदेश से निकली हुई सभी विभूतियों के जनक रहे हैं। राज्य सरकार इन विभूतियों को प्रेरणा स्रोत के तौर पर देखती हैं तथा शिक्षा के क्षेत्र में इन सभी विभूतियों के सहयोग से सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणावत्ता बच्चों की घटती संख्या तथा शिखर पर शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के स्तर को बनाये रखने हेतु एक कार्यक्रम 'अखण्ड शिक्षा ज्योति मेरे स्कूल से निकले मोती' का शुभारम्भ कर चुके हैं।

मेरा अनुरोध इस पत्र के द्वारा उन सभी महानुभावों से है जो भी प्रदेश में शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षण कार्यक्रम में वांछित परिवर्तनों को लेकर चिन्तित हैं। आपके बहुमूल्य सुझाव जो शिक्षा से सम्बन्धित किसी भी रूप में हो, को हम कार्यन्वयन करने का प्रयास करेगें। यदि आपने हिमाचल प्रदेश के सरकारी स्कूलों के अतिरिक्त और कहीं से शिक्षा प्राप्त की हो तथा हिमाचल प्रदेश की शिक्षा के प्रति चिन्तित हैं अथवा किसी भी विषय पर अपना व्याख्यान या चिन्तन किसी भी सरकारी स्कूल, महा–विद्यालय में देना चाहते हैं तब भी आपका स्वागत है आप अपने विषय तथा विषय–वस्तु के बारे में अधोहस्ताक्षरी या सचिव (शिक्षा), को बता सकते हैं। आपके वक्तव्य को या सुझाव को कार्यन्वित करवाया जाएगा। अखण्ड शिक्षा कार्यक्रम मात्र किसी श्रेणी या व्यक्ति तक ही सीमित नहीं है। राज्य सरकार को यह भली–भांति पता है कि हिमाचल प्रदेश के सरकारी स्कूलों से निकली हुई विभूतियां विदेशों तक फैली हैं तथा प्रचार की चका–चौंध से कोसों दूर हैं । मेरा अनुरोध उन सभी विभूतियों से भी है हम उनकी निजता का ध्यान रखकर उनके विशिष्ट योगदान को भी उचित रूप से सहेजना चाहेंगें तथा उनकी सेवाओं से भी जिस भी रूप में देना चाहें, से लाभान्वित होना चाहेंगें।

सादर,

शुभेच्छु
[signature]
सुरेश भारद्वाज,

(सचिव (शिक्षा)
मो. न. 9805872784
का० नं० 0177- 2621859
ई मेल: arun59102@gmail.com
उपरोक्त पर सुझाव भेज सकते हैं।)